लोक साहित्य का महत्व

विनय कुमार चौधरी

लोक साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक तथा विस्तृत है। साधारण जनता का हँसना, रोना, गाना, खेलना, कूदना सभी लोक साहित्य के अन्तर्गत आ जाता है। पुत्रोत्पत्ति से लेकर मरण पर्यंत माने हुए सोलह संस्कारों के अवसरों पर गाये जाने वाले गीत लोक साहित्य की अमूल्य निधि हैं। लोक साहित्य जनता की गोद में पलकर ही बड़ा होता है। एक समय था, जब जनता की सरलता, स्वाभाविकता तथा स्वच्छन्दता से यह साहित्य विभूषित रहता था। वह आडम्बर और कृत्रिमता से कोसों दूर था। ''वह साहित्य उतना ही स्वाभाविक था, जितना जंगल में खिलनेवाले फूल, उतना ही स्वच्छन्द था, जितना आकाश में विचरने वाली चिड़िया; उतना ही सरल तथा पवित्र था, जितना गंगा की निर्मल धारा। उस समय के साहित्य का जो अंश आज अवशिष्ट तथा सुरक्षित रह गया है, वही हमें लोक साहित्य के रूप में उपलब्ध होता है।''